E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

रूस - यूक्रेन युद्ध व भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

डॉ. कुलदीप सिंह

राजनीति विज्ञान

Paper Rcevied date

05/05/2025

Paper date Publishing Date

10/05/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.15453408

IMPACT FACTOR

5.924

परिचय

रूस-यूक्रेन संकट का वैश्विक अर्थव्यवस्था पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है, और भारतीय व्यवसाय भी इसके प्रभावों से अछूते नहीं रहे हैं। इस संघर्ष के कारण आपूर्ति श्रृंखलाओं में व्यवधान उत्पन्न हुआ है, इनपुट लागत में वृद्धि हुई है, और निर्यात की मांग में कमी आई है। इसके कारण वैश्विक अर्थव्यवस्था में निश्चितता और अस्थिरता भी बढ़ी है, जिससे भारतीय व्यवसायों के लिए भविष्य की योजना बनाना और भी मुश्किल हो गया है। 24 फरवरी 2022 को शुरू हुआ यूक्रेन पर रूस का पूर्ण आक्रमण कोई अलग-थलग घटना नहीं थी। एक अर्थ में इसे स्वतंत्र यूक्रेन और मास्कों में उसके पूर्व शासकों के बीच तनाव की परिणति के रूप में देखा जा सकता है। दोनों देशों के इतिहास सदियों से एक दूसरे से जुड़े हुये हैं।

यूक्रेन और रूस के बीच मतभेदों के मूल क्या हैं?

यूक्रेन और रूस दोनों ही अपनी उत्पत्ति कीवियन रस से मानते हैं, नौवीं शताब्दी एक प्रारंम्भिक मव्ययुगीन राज्य था। उस क्षेत्र में रहने वाले लोग जटिल सामाजिक राजनैतिक और ऐतिहासिक प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप बहुत बाद में खुद को रूसी या यूक्रेनी मानने लगे।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

रूस - यूक्रेन युद्ध कैसे शुरू हुआ

रूस-यूक्रेन संकट 2014 **में शुरू हुआ, जब यूक्रेन के रूस समर्थक राष्ट्रपति विवटर यानुकोविच को कई विरोध प्रदर्शनों के बाद सत्ता से हटा दिया गया था। रूस ने यूक्रेन से क्रीमिया प्रायद्वीप को अपने में मिला लिया और पूर्वी डोनवास क्षेत्र में रूस समर्थक अलगाववादियों का समर्थन किया। इस संकट की शुरुआत में कई कारक शामिल हैं, जिनमें शामिल है**

यूक्रेन की रणनीतिक स्थिति: यूक्रेन रूस और पश्चिम के बीच स्थित है, और दोनों पक्ष इसे रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण देश के रूप में देखते हैं।

यूक्रेन की नाटो में शामिल होने की इच्छा यूक्रेन ने नाटो ने शामिल होने की इच्छा व्यक्त की है, जो एक पश्चिमी सैन्य गठबंधन है जिसे रूस अपनी सुरक्षा के लिए खतरा मानता है।

रुस द्वारा यूक्रेन के पश्चिम के साथ एकीकरण का विरोध: रूस ने यूक्रेन के

पश्चिम के साथ एकीकरण के प्रयासों का विरोध किया है, तथा उसने यूक्रेन की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता को कमजोर करने के लिए कदम उठाए हैं। रूस - यूक्रेन संकट के कारण यूक्रेन में मानवीय संकट पैदा हो गया है, जिसके कारण लाखों लोग अपने घरों से विस्थापित हो गए हैं। इसका वैश्विक अर्थव्यवस्था और सुरक्षा परिदृश्य पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है।

भारतीय व्यवसायों पर प्रभाव

कमजोर रुपया: यूक्रेन पर रूती आक्रमण के कारण भारतीय संपत्तियों की बिक्री हुई है और रुपये का अवमूल्यन हुआ है। इससे भारतीय व्यवसायों के लिए वस्तुओं और सेवाओं का आयात करना अधिक महंगा हो गया है और वैश्विक बाजार में उनकी प्रतिस्पर्धात्मकता भी कम हो गई है।

वैश्विक अर्थव्यवस्था में अनिश्चितता और अस्थिरता बढ़ी:

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

इस संकट के कारण वैश्विक अर्थव्यवस्था में अनिश्चितता और अस्थिरता भी बढ़ी है। इससे भारतीय व्यवसायों के लिए भविष्य की योजना बनाना और निवेश संबंधी

निर्णय लेना अधिक कठिन हो गया है।

निर्यात की मांग में कमी:

युद्ध के कारण भारत समेत कई देशों से निर्यात की मांग में भी कमी आई है। इसके कई कारण हैं, जिनमें कमजोर वैश्विक अर्थव्यवस्था, आपूर्ति श्रृंखलाओं में व्ययवान और रूस और बेलारूस पर प्रतिबंध लगाना शामिल है। भारतीय व्यवसाय इन चुनौतियों का कई तरह से जवाब दे रहे हैं। कुछ व्यवसाय घरेलू स्तर पर ज्यादा इनपुट खरीदकर आयात पर

अपनी निर्भरता कम करने की कोशिश कर रहे हैं। अन्य रूस और यूक्रेन पर अपनी निर्भरता कम करने के लिए अपने निर्यात बाजारों में विविधता लाने की कोशिश कर रहे हैं। फिर भी, अन्य उच्च इनपुट लागत के प्रभाव को कम करने के लिए लागत में कटौती के उपाय लागू कर रहे हैं।

वैश्विक अर्थव्यवस्था में परिवर्तन

विवैश्वीकरण: युद्ध से विवैश्वीकरण की प्रवृत्ति में तेजी आने की संभावना है, क्योंकि देश जायात और अंतर्राष्ट्रीय आपूर्ति श्रृंखलाओं पर अपनी निर्भरता कम करना चाहते हैं। इससे भारतीय व्यवसायों के लिए वैश्विक बाजार में काम करना और भी मुश्किल हो सकता है।

आत्मनिर्भरता पर अधिक ध्यान युद्ध के कारण आत्मनिर्भरता पर अधिक व्यान देने की संभावना है, क्योंकि देश महत्वपूर्ण वस्तुओं और सेवाओं के आयात पर अपनी निर्भरता कम करना चाहते हैं। इससे भारतीय व्यवसायों के लिए उन वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन और निर्यात करने के अवसर पैदा हो सकते हैं जिनका वर्तमान में आयात किया जाता है।

कुछ भारतीय व्यवसाय अधिक प्रभावित-

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

यूजन में

युद्ध के कारण तेल और गैस की कीमतों में भारी वृद्धि हुई है। इसका उन व्यवसायों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है जो इन वस्तुओं पर निर्भर हैं, जैसे

एयरलाइंस, शिपिंग कंपनियाँ और पेट्रोकेमिकल कंपनियाँ । विनिर्माणरू युद्ध ने आपूर्ति श्रृंखलाओं को भी यावित किया है, जिससे निर्माताओं के लिए आवश्यक कच्चे माल और घटकों को प्राप्त करना मुश्किल और महंगा हो गया है। इसका ऑटोमोटिव इलेक्ट्रॉनिक्स और मशीनरी सहित कई उद्योगों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। कृषि: इस संकट ने वैश्विक खाद्य आपूर्ति को भी वावित किया है। युद्ध के कारण खाद्य पदार्थों की कीमतें बढ़ गई हैं और कुछ वस्तुओं की कमी हो गई है। इसका खाद्य और पेय उद्योग के साथ-साथ उपभोक्ताओं पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ा है पर्यटन: दोनों देशों के बीच संघर्ष और उसके बाद रूस पर लगे प्रतिबंधों के कारण दोनों देशों में पर्यटन में गिरावट आई है। इसका पर्यटन और आतिथ्य उद्योग के कारोवार पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

भारतीय व्यवसायों को निम्नलिखित पर

ध्यान केंद्रित करना चाहिए:

आयात पर अपनी निर्भरता कम करें व्यवसायों को घरेलू स्तर पर या अन्य देशों से अधिक इनपुट प्राप्त करने के तरीके तलाशने चाहिए। इससे आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान और मुद्रा में उतार-चढ़ाव के प्रति उनके जोखिम को कम करने में मदद मिलेगी। नवाचार में निवेश करें व्यवसायों को नए उत्पादों और प्रक्रियाओं को विकसित करने के लिए अनुसंधान और विकास में निवेश करना चाहिए। इससे उन्हें वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धी बने रहने और अपने ग्राहकों की बदलती जरूरतों को पूरा करने में मदद मिलेगी।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

निष्कर्ष

रूस-यूक्रेन संकट ने निस्संदेह भारतीय व्यवसायों पर अपनी छाप छोड़ी है, जिससे अभूतपूर्व चुनौतियों और अनिश्चितताओं का दौर शुरू हो गया है। ये प्रभाव विभिन्न तरीकों से प्रकट होते हैं, जैसे इनपुट जगत में वृद्धि और आपूर्ति श्रृंखला में व्ययवान से लेकर कमजोर रुपया और वैश्विक अस्थिरता में वृद्धि ।

भारतीय व्यवसाय अनुकूलनशीलता के साथ प्रतिक्रिया दे रहे हैं, आपूर्ति श्रृंखलाओं में विधिवता ला रहे हैं, नए निर्यात बाजारों की खोज कर रहे हैं, तथा लागत में कटौती के उपाय अपना रहे हैं। हालांकि इस संकट के दीर्घकालिक परिणाम अनिश्चित बने रह सकते हैं, लेकिन यह स्पष्ट है कि यह विवैश्वीकरण और आत्मनिर्भरता की ओर बदलाव को तेज करेगा। भारतीय व्यवसायों को इन परिवर्तनों द्वारा प्रस्तुत अवसरों का लाभ उठाना चाहिए। भारतीय व्यवसायों को आयात पर निर्भरता कम करने, निर्यात बाजारों में विधिवता लाने और अनुसंधान एवं विकास में निवेश करने को प्राथमिकता देनी चाहिए। इसके अलावा, जोखिम प्रबंधन क्षमताओं को मजबूत करना, आपूर्तिकर्ताओं और ग्राहकों के साथ मजबूत संबंध बनाना, संचालन को अंतर्राष्ट्रीय बनाना और अन्य व्यवसायों के साथ सहयोग को बढ़ावा देना अप्रत्याशित वैश्विक परिदृश्य को नेविगेट करने में महत्वपूर्ण होगा जो उभरने की संभावना है।

संदर्भ-

1. **टाइम्स ऑफ इंडिया**

2. **आनन्द जे.सी. (रूस यूक्रेन क्राइसस इफेक्ट ऑन इंडिया)**

3. **जी. डी. यवती (दा रूस यूक्रेन वार)**